2 17-18

International Multilingual Research Journal

Vidyawarta®

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Special Issue

श्री शिवाजी विद्या प्रसारक संस्था का

भाऊसाहेब ना.स.पाटील साहित्य एवं मुल्ला फिदा अली मुल्ला अब्दुल अली वाणिज्य महाविद्यालय, देवपुर, धुले (महाराष्ट्र)

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग

एवं

उत्तर महाराष्ट्र हिंदी प्राध्यापक परिषद

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

वार्षिक अधिवेशन एवं राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी

'इक्कीसवीं सदी का हिंदी कथा-साहित्य : विविध आयाम'

रविवार, ४ फरवरी २०१८

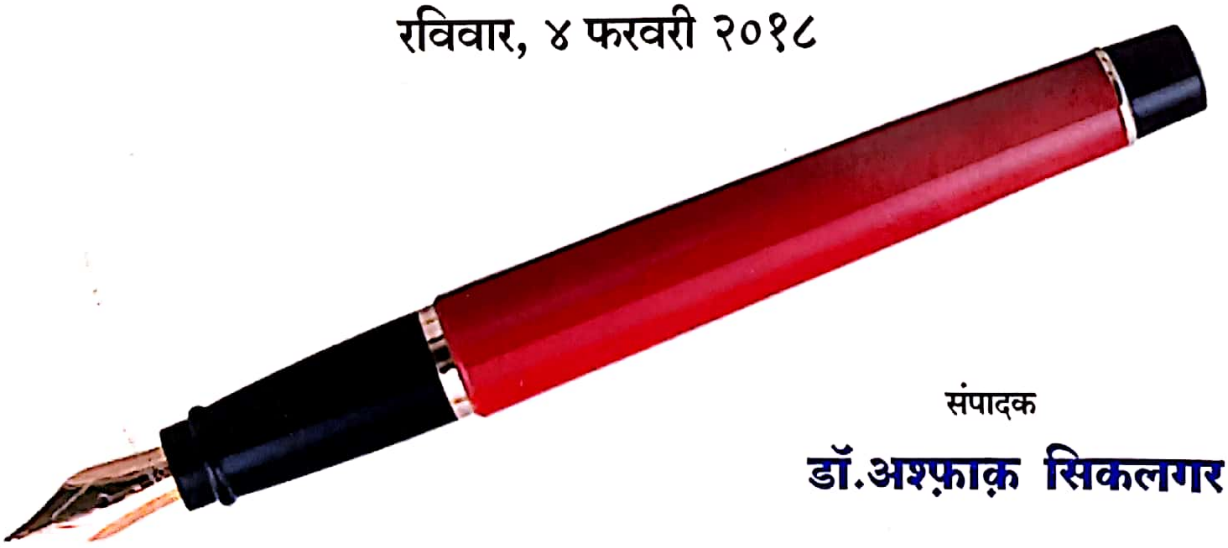

संपादक

डॉ.अश्फ़ाक़ सिकलगर

Scanned with CamScanner

13) अकाल में उत्सव : किसान जीवन का आख्यान
डॉ. आभा खेडेकर || 56

14) 'झूला-नट' में अभिव्यक्त पारिवारिक संघर्ष
डॉ. चंद्रमादेवी पाटील || 59

15) लोबल गांव के देवता : भूमंडलीकरण के संदर्भ में आदिवासी समाज
प्रा. डॉ. मृदुला वर्मा || 60

16) इक्कीसवीं सदी में मानव संबंधों को दर्शाती कहानी 'हरिया काका'
प्रा. मच्छिंद्र गुलाब ठाकरे, देवपुर || 62

17) अमरकान्त की कहानी 'सवा रुपयें' में चित्रित वयस्क जीवन की वेदना
डॉ. आर. के. जाधव || 64

18) भूमण्डलीकरण के परिप्रेक्ष्य में दौड उपन्यास
डॉ. सुनिल पानपाटील & प्रा. मनोज रा. पाटील || 66

19) किन्नर समाज की व्यथा की कथा - मैं पायल
डॉ. संजयकुमार शर्मा || 70

20) शिवानी की कहानियों में नारी
प्रा. डॉ. महेंद्र जयपालसिंह रघुवंशी || 74

21) अतीत होती बंजर जाति की जीवंत व्यथा-कथा : 'रेत'
डॉ. संजय विक्रम ढोडरे || 76

22) डॉ. सुशीला टाकभौरे की कहानियों में नारी चेतना
प्रा. डॉ. अजित चुनिलाल चव्हाण || 79

23) मुख्यधाराओं से जुडति कहानी : गम नहीं, हाँ आँख मेरी नम नहीं।
प्रा.डॉ.पंढरीनाथ पाटील || 83

24) मातादिन और मंगल पाण्डेय का लौटा' में चित्रित जातिगत विषमता
प्रा. डॉ. महेश वसंतराव गांगुर्डे || 85

25) मानव जीवन की आलोचना 'दौड'
डॉ. अशोक शामराव मराठे || 87

http://www.vidyawarta.blogspot.com
https://sites.google.com/site/vidyawartajournal

Scanned with CamScanner

24

मातादिन और मंगल पाण्डेय का लौटा' में चित्रित जातिगत विषमता

प्रा. डॉ. महेश वसंतराव गांगुर्डे
हिन्दी विभागप्रमुख,
कला, वाणिज्य महाविदयालय, अक्कलकुवा

सुरजपाल चौहान हिंदी के जाने माने दलित साहित्यकार है। उनका १९९९ मे आया हुआ लघुकथा संग्रह 'हैरी कब आयेगा' दलित साहित्य जगत में प्रख्यात हैं। सुरजपाल चौहान का जन्म २० अप्रैल १९५५ के दिन उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के फुसावली गाँव में हुआ। सुरजपाल चौहान ने अपने साहित्य द्वारा होने वाले अत्याचारों पर बेबाकी से प्रकाश डाला हुआ हैं। ऐसा नहीं हैं की उन्होंने सिर्फ सवर्णो पर प्रहार किया हैं उन्होंने दलित वर्ग में मौजूद भेदभाव व प्रपंच पर भी प्रहार किया हैं। दयाशंकर त्रिपाठी जी इस संदर्भ में लिखते है कि, "वे जिस अधिकार के साथ सवर्ण समाज का नंगापन उधारते हैं, उसी प्रकार दलित समाज की हकीकतों और कमजोरीयों का भी साक्षात्कार हमें करवाते हैं।"[१]

सुरजपाल चौहान का बचपन भी अन्य दलितों की भाँति अभावों में बीता। उनके अनुभव दलित जीवन के यथार्थ को खोलते हैं। सुरजपाल चौहान की निगाह वहाँ जाती हैं जहाँ अन्य रचनाकारों की निगाह चूक जाती हैं। सुरजपाल चौहान अपनी बात जहाँ बेधडक होकर कहते हैं। वही दुसरे रचनाकार बचते नजर आते हैं। शायद इसीलिए काशिनाथ सिंह जी को कहना पडा कि, "दलित साहित्य लिखने के लिए दलित होना जरुरी नहीं।"[२]

प्रस्तुत कहानी 'मातादीन और मंगल पाण्डेय का लोटा' यह स्वतंत्रता सेनानी मंगल पाण्डेय और हेला भंगी समाज का मातादीन इन दो व्यक्तियों के ऐसे अनुभवों की कहानी है जिन अनुभवों को आज कोई जानना नहीं चाहता। न जाने क्यों आज भी उन योद्धाओं का इतिहास छिपाया जाता हैं जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सहभाग लिया जैसे चौरीचोरा काण्ड का नेतृत्व करने वाला रामपति चमार, जालियनवाला काण्ड का नेतृत्व करने वाला नत्थू धोबी हो या फिर वीरांगना झलकारी बाई हो। देश के कलमकारों ने हमेशा से ही सच्चे इतिहास को दर्शाने के बजाए उसे छुपाने का ही काम किया हैं। अपनी कलम के द्वारा इन्होंने हमेशा दूसरे उन व्यक्तियों को बड़ा करने का काम किया है जिन्होंने उजागर न हुए पात्रों से मात खाई है।

यह कहानी भारत के पारतंत्रता के समय की कहानी हैं जिन दिनों राजधानी कलकत्ता से सोलह किलोमीटर दूर अंग्रेजी शासन ने फौज के लिए छावनी बनाई थी। वही पास में बैरकपूर फेक्ट्री में बन्दूक के कारतूस बनायें जाते थे। उसी बैरकपूर फेक्ट्री में मातादीन हेला नामक एक युवक फौज के स्टोर में गाय और सुअर चर्बी से भरे कनस्तरों को मजदूरों के हाथों रखवाने का काम करता था। उसका रौब-दाब इतना था कि हर कोई उससे प्रभावित था। वह ऊँचे स्वर में मजदुरों से कहता- "इए तपन, इन टिनों-गुनों को पासे सोरिये राख, आइसा जाऊर रास्ता घेरे दे। (अर्थात अरे तपन, इन कनस्तरों को रास्ते से हटाकर साइड में रख, आने-जाने के लिए रास्ता बना रहने दे)।"[३]

गंगाधर बॅनर्जी एण्ड कम्पनी थी जिसमें फेक्ट्री के लिए पशुओं की चर्बी की आपूर्ति का ठेका लिया जाता था। तपन उसी कम्पनी में काम करता था। मातादीन खलासी प्रमुख था, मातादीन हेला के पुरखे कभी इलाहाबाद एवं उसके आसपास मिर्जापुर, बनारस, सुल्तानपुर, बरेली, कानपूर, बाँदा, प्रतापगढ, चित्रकूट आदि जनपदों के होते हुए बंगाल में आकर बस गए थे। मातादीन के पुरखे अंग्रेजों के सम्पर्क में आने के कारण सरकारी नौकरी में रहे थे। पुरखे अंग्रेजी नौकरी में होने के कारण तथा साथ ही अंग्रेज फौज में होने के कारण उस फौजी रहन-सहन का खास असर मातादीन पर पड़ा था। मातादीन बड़ा ही संयमशील, स्पष्टवादी, संयमशील और स्वाभिमानी व्यक्ति था।

भारत परतंत्रता के बेड़ियों में जकड़ा हुआ था और भारतीय लोग ओछी मानसिकता, ऊँच-नीच की भावना में जकडे हुए थे। देश के दलितों की हालत खराब थी, उनका पक्का मकान बनाना तो दूर एवं धन-संपत्ती जमा करना तो जैसे मना था। उन्हें अपनी सुरक्षा के लिए हथियार रखना भी मना था, इसीलिए दलित समाज के युवा बचपन से ही गदका-बनैती व लट्ठ चलाने की विद्या सीखने के साथ-साथ पहलवानी के दाँव-पेंच सीखने में विशेष रूचि रखते थे। लेकिन माहोल यह था कि सवर्ण मानसिकतावाले पहलवान दलित समाज के युवकों को अपना शार्गिद बनान शान के खिलाफ समझते थे। मातादीन के सामने भी यह समस्या गंभीर रूप से उभरकर सामने आयी। सवर्ण उस्तादों ने मातादीन को अपना शार्गिद बनाने से साफ इन्कार कर दिया। सभी मातादीन को उसकी जात याद दिलाकर उसे अपमानित कर के वापस भेज देते थे। मातादीन ने अपना धैर्य न खोते हुए अपनी कोशिश जारी रखी, आखिरकार उनकी सच्ची लगन और निष्ठा काम

Scanned with CamScanner

में आयी।

मातादीन को इस्लाउद्दीन नाम के गुरू मिल गए। इस्लाउद्दीन बंगाली पल्टन नं ७० में बैण्ड बजाने का काम करते थे। साथ ही साइड ड्रम, बिग-ड्रम व बिगुल बजाने में निपुण थे। इसके साथ ही वह खाली समय में वह अपने अखाड़े में युवाओं को गदका-बनैती, पटेबाजी व पहलवानी के दाँव सिखाया करते थे। मातादीन को ऐसा गुरु मिल गया था और इस्लाउद्दीन को ऐसा शार्मिद मिल गया था जिससे दोनों में अच्छी जमती थी। मातादीन ने अपनी कडी मेहनत और लगन से अपने गुरु का मन जीत लिया, जिस कारण इस्लाउद्दीन अपने प्रिय शिष्य पर विशेष ध्यान देते थे। मातादीन की अंग्रजों की फौज में धाक तो थी ही अब दूर-दूर तक उनके नाम के चर्चे होने लगे। इधर मंगल पाण्डेय का नाम भी चर्चा में था। मातादीन दण्ड बैठक लगा रहा था। "चार सौ छियालिस..सैतालीस, अड़तालीस, चार सौ उनचास और ये चार सो पचास।"[४] इतने दण्ड बैठक लगाने के बावजूद फुर्ती से खड़े हो जाते थे। मंगल पाण्डेय की आँखे मातादीन को देख फटी की फटी रह गई। क्योंकि मंगल पाण्डेय सौ-डेढ-सौ दण्ड बैठक लगाया करते थे।

एक बार इस्लाउद्दीन के अखाडे में कुश्तियों की प्रतियोगिता चल रही थी। अखाडे के चारों ओर दर्शकों की भीड जमा थी। मंगल पाण्डेय भी सब देख रहा था। मातादीन ने लगातार चार-पाँच पहलवानों को धुल चटा दी थी। वह अखाडे की मिट्टी को अपने सीने पर मलता व खम्ब ठोकते हुए बोलता - 'ला - इल्लाह, इल्लिलहा मोहम्मद दुर रसुलिल्लाह' कलमा पढते ही सामने वाले को पसीना आ जाए ऐसे खम्ब ठोकता। उस मंगल पाण्डेय ने मातादीन को नजदीक से जाना था और वहाँ से निकल गए।

दिन बीतते गए, एक बार कँटीन के सामने मंगल पाण्डेय और मातादीन की मुलाकात होती है। मुलाकात दोस्ती में बदल जाती है। दोनों दोस्त अब जब भी मिलते है बस देशप्रेम की ही बात करते है। मातादीन मंगल पाण्डेय से बहुत प्रभावित होता है। मंगल पाण्डेय भी कुश्ति प्रतियोगिता की याद दिलाकर मातादीन की प्रशंसा करते न थकता थे। दोनों की बातों में राष्ट्रप्रेम और अपने देश के प्रति आस्था के भाव स्पष्ट रूप से उनके विचारों से झलकते थे।

एक दिन मंगल पाण्डेय को बातों-बातों में मातादीन की जात का पता चल जाता है। उस दिन के बाद मंगल पाण्डेय मातादीन से दूरिया बनाने लगता है। "असली और सच्ची बात का भेद खुलने पर मंगल पाण्डेय का व्यवहार अब उनके प्रति एकदम-सा बदल गया। उसे एक मुस्लिम का बलशाली पहलवान होना स्वीकार था लेकिन एक हेला भंगी पहलवान। बस, उसी दिन से मंगल पाण्डेय के सीने पर साँप लोट गया। बहुत भारी ठेस लगी थी और ग्लानि से भर गया था मंगल पाण्डेय।"[५]

एक दिन मातादीन फैक्ट्री से काम कर के लोट रहा था। उमस के कारण उसका शरीर पसीने से सरोबार था। इधर से मंगल पाण्डेय पानी से भरा लोटा ले के जा रहा था। मंगल पाण्डेय को देख मातादीन ने उसके हाथ से पानी पिने के लोटा लेना चाहा तो मंगल पाण्डेय एकदम से भडक कर कहने लगा कि - "अरे भंगी मेरा लोटा छूकर अपवित्र करेगा क्या ?"[६] मंगल पाण्डेय से ऐसे शब्द सुनकर मातादीन के पैरों तले की जमीन खिसक गई। मातादीन ने जब मंगल पाण्डेय से पूछा क्या हुआ भाई तबीयत खराब नहीं है क्या ? तब मंगल पाण्डेय कहता है - "कुछ नहीं हुआ मुझे और मेरी तबीयत भी ठीक है, अंग्रेज फौज मं नौकरी करने के बाद तू अपनी जाति ही भूल गया, अपनी खाल में रहा कर भंगी।"[७] मातादीन मंगल पाण्डेय को समझाते हुए कहते है - "यार पाण्डेय तुम जब भी मिलते हो तो एकता, देश-प्रेम, समता व समरसता की बातें करते हो।"[७] अपनी बात को आगे बढाते हुए व कहता है कि - "देश गुलामी की जंजीरों से जकडा है और तुम ऊँच-नीच की बातें कर रहे हो !"[८]

मंगल पाण्डेय को लगा था कि मातादीन उसकी बातें सुनकर गुस्सा होगा लेकिन मातादीन देशप्रेम की बाते करने लगा था। मातादीन मंगल पाण्डेय का कुछ भी बरा भूला नहीं कहता लेकिन एक खरी-खोटी मंगल पाण्डेय का सुनाता है कि - "पण्डत, तेरी पण्डताई उस समय कहाँ चली जाती है जब तू और दूसरे ब्राह्मण सिपाही गाय और सूअर की चर्बी से बने कारतूसों को मुँह में डालकर उनकी परतें खोलकर बन्दूक भरते हो।"[९] यह बातें सुनकर मंगल पाण्डेय अवसन्न और संज्ञा-शून्य होकर उसकी तरफ देखता है।

कहानी का अंत मंगल पाण्डेय का लोटा उसके हाथ से छूटकर जमीन पर लुढकते हुए औंधे मुँह दूर नाली में जा गिरता है। यह वाक्य प्रतीकात्मक तरीके से लिखा गया है। क्योंकि जाति का अभिमान रखने वाले लोग जाने-अनजाने में ऐसे काम करते है, जो काम उनके धर्म या उनके उसूलों के खिलाफ होते है। लेकिन फिर भी अपनी जाति का अभिमान रखते हुए दूसरों को हमेशा नीचा समझते हैं।

निष्कर्षत:

कहा जा सकता है कि, मातादीन और मंगल पाण्डेय का लोटा इस कहानी में सवर्णों द्वारा दलितों पर जिस तरह से जाति की ऊँच-नीच के भेदभाव के कारण अन्याय-अत्याचार होता है इसका वर्णन है। प्रस्तुत कहानी में अन्याय-अत्याचार का भले ही चित्रण न हो पर दूसरे बलशाली को एक बलशाली सिर्फ जाति के कारण न उसे

Scanned with CamScanner

दोस्त मानता है न देशप्रेमी। जब तक उसे उसकी जाति का पता नहीं होता वे अच्छे दोस्त बने रहते है लेकिन जाति का पता चलते ही ऐसा क्या हो जाता है कि वही व्यक्ति दोस्ती या इन्सान समझने के लायक नहीं समझा जाता।

संदर्भ ग्रंथ :-

१. वह दिन जरूर आयेगा - सुरजपाल चौहान, भूमिका से .....
२. नया ब्राह्मण - सुरजपाल चौहान, भूमिका से .....
३. नया ब्राह्मण - सुरजपाल चौहान, पृ. ११४
४. वही पृ. ११६
५. वही पृ. ११७
६. वही पृ. ११८
७. वही पृ. ११९
८. वही पृ. ११९
९. वही पृ. ११९

❑❑❑

Scanned with CamScanner

Volume 8 (Special Issue 11)
April, 2018

17-18

ISSN - 2230 - 9578

Journal of Research and Development

A Multidisciplinary International Level Refereed Journal

COSMOS
IMPACT FACTOR

4.270

UGC Journal list No. 64768

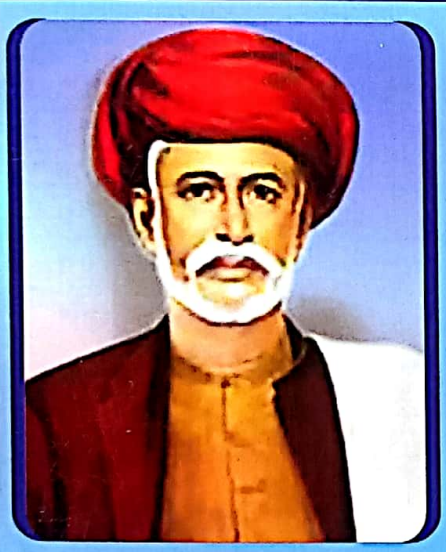

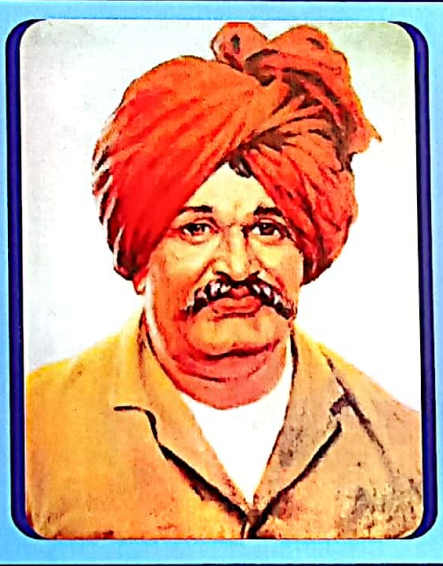

१४ एप्रिल २०१८ भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या जयंतीनिमित्त...

सामाजिक समतेचे प्रणेते - महात्मा फुले, राजर्षी शाहू महाराज व डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर

Editor : Dr. R.V. Bhole

'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102
Email - info@jrdrb.com Visit - www.jrdrvb.com

Scanned with CamScanner

"सामाजिक समतेचे प्रणेते : महात्मा फुले, राजर्षी शाहू महाराज व डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर"

अनुक्रमणिका

Sr. No.	Name	Title of the Paper	Page No.
01	Dr. Smriti Bhosle	Dr. Ambedkar's Dalit Liberation Approach	1-4
02	प्रा.डॉ. दिलीपसिंह श. निकुंभ	समाजसुधारक : महात्मा ज्योतिबा फुले	5-8
03	प्राचार्य, डॉ एस.एस. शिंदे	डॉ.बाबासाहेबांचा जीवनपट व शैक्षणिक विचार	9-12
04	Dr. Ashok Pitambar Khairnar	Dr. Babasaheb Ambedkar on the Annihilation of Caste and Buddha's Dhamma	13-18
05	प्रा. डॉ.टी.ए. मोरे	फुले-शाहू-आंबेडकर प्रेरणा - एक दृष्टिक्षेप	19-22
06	प्रा.डॉ. प्रकाश अर्जुन भामरे	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे धम्मविचार	23-26
07	प्रा. डॉ. सुरेश आर. वराडे	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे पत्रकारितेतील योगदान	27-30
08	प्रा.डॉ. विजय जी. गुरव	दलित साहित्य के प्रेरणास्त्रोत : महात्मा जोतीराव फुले	31-33
09	डॉ.विजया विनायक पाटील	स्त्रीयांविषयक कायदे निर्मितीत राजर्षी शाहू महाराजांचे योगदान	34-37
10	डॉ. संभाजी संतोष पाटील	महात्मा जोतीराव फुले यांच्या विधायक विचारधारेचा विश्लेषणात्मक अभ्यास	38-41
11	डॉ. भामरे नानाजी दगा	महात्मा फुले यांचे स्त्री शिक्षण विषयक विचार	42-44
12	डॉ. प्रमिला हरीदास भुजाडे	क्रांतीसूर्य महात्मा ज्योतीबा फुले यांच्या शैक्षणिक कार्याची चळवळ	45-48
13	प्रा.डॉ. आर.एम. साळुंके	जोतिराव फुले का हंटर कमीशन से निवेदन	49-51
14	डॉ. महेश व्ही. गांगुर्डे	म. जोतीराव फुले की ग्रंथ-संपदा	52-54
15	डॉ. भगवान सतन पाटील	राजर्षी शाहू महाराज यांचे शैक्षणिक कार्यातील योगदान	55-57
16	डॉ. दिनकर संतुकराव कळंबे	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि भारतीय राज्यघटना	58-60
17	डॉ. सुनिता आत्माराम टेंगसे	राजर्षी शाहु महाराजांची आरक्षण विषयक भुमिका	61-63
18	प्रा.डॉ.बालासाहेब किलचे	भारतीय लोकशाहीची सद्यस्थिती आणि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर	64-67
19	डॉ. चंद्रशेखर वाणी	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर, विदेशात शिक्षण एक तपश्चर्या...	68-70
20	प्रा.डॉ.अंभुरे एस.डी.	छत्रपती शाहू महाराजांचे विविध कला क्षेत्र विषयक धोरण	71-73

Scanned with CamScanner

"म. जोतीराव फुले की ग्रंथ-संपदा"

डॉ. महेश व्ही. गांगुर्डे (हिन्दी विभाग प्रमुख)
विद्या विकास मंडळाचे कला व वाणिज्य
महाविद्यालय, अक्कलकुवा जि. नंदुरबार

- प्रस्तावना -

आधुनिक महाराष्ट्र की सामाजिक क्रांति के अग्रदूत, परंपरागत जाति-व्यवस्था के विरूद्ध बगावत करनेवाले पहले महापुरूष, भारतीय समाज में हजारों वर्षो से चली आई धार्मिक तानाशाही को चुनौती देकर सुधार करनेवाले सुधारक, समानता, स्वतंत्रता तथा बंधूता जैसे मानवतावादी मूल्यों का समाज में प्रचार-प्रसार करनेवाले, सभी मानवों के समान अधिकारों के लिए जीवनभर लडनेवाले बहुआयामी व्यक्तित्व महात्मा जोतीराव फुले थे। उनका जन्म सन् 1827 में महाराष्ट्र के पुणे में हुआ। उनके पिता गोविंदराव तथा माता चिमणाबाई अत्यंत सरल और मितभाषी स्वभाव के थे। बचपन से ही वे एक तेज, होशियार और समझदार बालक थे। उन्होंने पढाई में अच्छी प्रगति कर लिखना-पढना सीख गये । बचपन सेही वे मजबूत डोलडौलवाले तथा सशक्त बालक थे। प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् उन्होंने अपने पिता की फुलबाडियों और खेतों में काम करना प्रारंभ कर दिया। उनकी शिक्षा के प्रति रूची देखकर पिता ने उन्हें उच्च शिक्षा हेतू स्कॉटिश मिशन की पाठशाला में भर्ती कराया। अंग्रेजी शिक्षा के कारण जोतीराव को हिंदू धर्म में विद्यमान ऊँच-नीच का भेद, अन्याय और धर्माचरण में निहित स्वार्थ का ज्ञान होने लगा । उनके मन में समाज की प्रगति के लिए कुछ करने की नयी चेतना जागृत होने लगी। जोतीराव के मन में अज्ञान की बेडियों से शोषितों तथा पीडितों का मुक्त कराना, अज्ञान तथा अन्याय को हमेशा के लिए दफना देना, शूद्रों, अतिशूद्रों तथा नारी वर्ग को ज्ञानरूप प्रकाश की पहली किरण दिखाना, विषमता का जाल तोड फेंकना, विश्व का ज्ञान-भंडार सबके लिए खोल देना आदि विचार वायु समान बहने लगे। उन्होंने इन विचारों से प्रेरित होकर अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने का निर्णय लिया और इसी कार्य में अपना जीवन न्यौछावर कर दिया। महात्मा फुले ने अपने जीवनकाल में विविध समाज सुधार के कार्य किए। जिनमें मुख्यतः महिला शिक्षण, महिला सशक्तीकरण, विधवा-मुंडन पर रोक, विधवा विवाह का समर्थन, बालविवाह का विरोध, बालहत्या प्रतिबंध, अछूतों के लिए कुआँ खोलना, सत्यशोधक समाज की स्थापना, देवदासी प्रथा पर प्रहार, अकाल में बालकों के लिए अन्नसत्र, किसानों की समस्याओं पर ध्यान आदि कार्य उन्होंने किए। उनके इन्हीं महान क्रांतिकारी सिद्धांतों तथा कार्यो की वजह से भारतीय समाज में समानता, स्वतंत्रता तथा बंधूता जैसे मानवतावादी मूल्यों का बीज बोया गया और समाज का संपूर्ण रूप से विकास हुआ है।

- साहित्य-सृजन संबंधित कार्य -

समाज में फैले ऊँच-नीच के भेदभाव को दूर करने हेतू जोतीराव फुले ने साहित्य-सृजन का मार्ग अपनाया। उनके साहित्य-सृजन का मूल हेतू शूद्रों तथा अतिशूद्रों की दयनीय स्थिति के मूल कारणों को स्पष्ट करना, उनमें जागृति लाकर उन्हें सत्य का बोध कराना, पढे-लिखे युवकों को उनके सामाजिक कर्तव्यों के प्रति सचेत करना तथा पिछडी जातियों में शिक्षा का प्रचार-प्रसार का महत्त्व सरकार को समझाना था। जोतीराव न तो कोई साहित्यचार्य थे, न भाषा-वैज्ञानिक और न ही इतिहासकार या धर्मवेत्ता। वे अपने समय के ऐसे महापुरूष थे जिन्होंने न्याय, नीति तथा मानवता के शाश्वत तत्त्वों को अपनाकर जनमानस को ज्ञानसाधना का मार्ग दिखाया। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से पुराने आचार-विचारों, रूढियों, कर्मकांडों, जप-जापों, ईश्वरी संकेतों, स्वर्ग-नरक जैसी धारणाओं में जकडे हुए भोले-भाले शूद्रातिशूद्र समाज को जागृत करने का कार्य किया। जोतीराव के लेखन का उद्देश्य लोगों को अपनी विद्वत्ता दिखाना नहीं था अपितु आधुनिक विचारों से मनुष्यों के आचरण में सुधार लाने की लगन थी। उनके सारे साहित्य सभी मनुष्य को समान अधिकार प्राप्त कराने, समाज में समाजीक, आर्थिक, धार्मिक और शैक्षणिक समानता के बीज बोनेवाले विचार पाये जाते हैं। उन्होंने अपने विचारों को सामान्य जनमानस तक पहुँचाने के लिए साहित्य का सृजन किया। उनमें विशेषतः 'तृतीय रत्न', 'छत्रपति राजा शिवाजी भोसले का पँवाडा', 'ब्राह्मणों की चालाकी', 'गुलामी', 'किसान का कोडा', 'सत्सार', 'चेतावनी', 'अछूतों की कैफियत', 'सार्वजनिक सत्यधर्म पुस्तक' आदि रचनाएँ सम्मिलित है।[1] उनके कुछ ग्रंथों का संक्षिप्त परिचय इसप्रकार है -

1) पँवाडा छत्रपति राजा शिवाजी भोसले का -

भारतीय स्वतंत्रता के प्रेरणादायी महापुरूष शिवाजी महाराज की जीवनी से प्रेरणा लेकर जोतीराव जी ने यह पँवाडा लिखा है। अपनी पीढी में शिवाजी महाराज के महान्, गौरवमय कार्य की ओर महाराष्ट्र का ध्यान आकर्षित करनेवाले पहले महाराष्ट्रीय नेता और अंग्रेजों के शासनकाल में महाराष्ट्र के पहले पँवाडा रचयिता जोतीराव हैं। इस पँवाडे में जोतीराव ने वीररसपूर्ण वाणी में शिवाजी महाराज के धैर्य, गर्व और देशभक्ति तथा वीरता का वर्णन किया है। वे कहते हैं कि, "वीर शिवाजी ने अपनी माँ की प्रेरणा और निष्ठावान, निर्भय, शूर-वीर साथियों की सहायता से स्वराज का झंडा गाड दिया।" वे चाहते थे की, यह पँवाडा पददलित, शूद्रों तथा अतिशूद्रों के लिए उपयुक्त हो। उन्होंने बडे ही परिश्रम से आसान भाषा का प्रयोग कर सभी को पसंद आए ऐसी धुनें चुनी हैं। इस पँवाडे में जोतीराव जी ने शिवाजी महाराज के जीवन की अधिकांश घटनाओं का धाराप्रवाही भाषा में वर्णन किया हैं। उन्होंने शिवाजी महाराज का उल्लेख 'वीर शूद्र के पूत्र' और 'ब्राह्मण पेशवाओं के मुख्य धनी' के रूप में किया है। इस पँवाडे में अफजलखाँ का वध, सख्यद बंधु, बीजापुर के आदिलशाह, सिद्दी जोहार, बाजी घोरपडे, शाहिस्ताखाँ आदि का भी वर्णन हैं। इस पँवाडे के माध्यम से जोतीराव जी की काव्य-रचना में बडी ही सहजता से प्रतिकात्मक रूप-वर्णन दिखाई देते हैं। कहीं भी कृत्रिमता, खुरदुरापन नहीं है। इससे पता चलता है कि सामाजिक जीवन की ओर देखने का उनका विशिष्ट दृष्टिकोण लगभग निर्धारित हो चुका था।[2]

2) ब्राह्मणों की चालाकी (ब्राह्मणांचे कसब) -

सन् 1869 में जोतीराव जी ने ब्राह्मणों की चालाकी (ब्राह्मणांचे कसब) यह पद्य-संग्रह प्रकाशित किया। इस संग्रह को उन्होंने कुनबी, माली, महार, मांग आदि शूद्रातिशूद्र जातियों को प्रेमपूर्वक अर्पित किया। यह पद्य-संग्रह उन्होंने लोगों को ब्राम्हणशाही के जाल से मुक्त कराने हेतू तथा अंग्रेज सरकार अपनी प्रजा में से इन अति उपयोगी वर्गो को शिक्षा दे और उससे उनकी आँखें खोलकर उन्हें पंडे-पुरोहितों की दासता से मुक्त करें इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए लिखा था। इन पद्यों में अज्ञानी और भोले-भाले किसानों के धार्मिक विश्वास का लाभ उठाकर अपना उल्लू सीधा करनेवाले पंडे-पुरोहितों का यथार्थ चित्रण है। उनके हर पद्य में धार्मिक भोलेपन और कुप्रथाओं पर करारी चोट की है। उन्होंने इन पद्यों में पंडित पुरोहितों द्वारा लोगों को ग्रहशांति, जप-जाप की सलाह, विवाह के समय मंत्रोच्चारण जैसी बातें कहकर मोटी दक्षिणा हथियाना, शूद्र को लूटने का मूल हेतू है, यह वर्णन किया है। वे कहते हैं, शूद्र अपनी अवनित के बारे में आत्मपरीक्षा करें और अपनी स्थिती को सुधारने की कोशिश करें। इसप्रकार इस पद्य-संग्रह द्वारा जोतीराव फुले ने लोगों को ब्राह्मणों की चालाकी, अंधविश्वास, धार्मिक कुप्रथाओं, जपजाप्य तथा कर्मकांडों के प्रति सजग करने का प्रयास किया है।[3]

3) गुलामी (गुलामगिरी) -

जोतीराव फुले जी ने सन् 1873 में यह ग्रंथ प्रकाशित किया। अमरीका के भूतपूर्व अध्यक्ष अब्राहम लिंकन ने सन् 1863 में हब्शियों की गुलामी समाप्त की। उस मानव-स्वतंत्रता के रक्षा के कार्य से प्रेरित होकर जोतीराव ने यह ग्रंथ यूनाइटेड स्टेट्स के उन सदाचारी लोगों को अर्पित किया जिन्होंने हब्शी गुलामों को गुलामी से मुक्त करने के कार्य में उदारता, निरपेक्षता और परोपकारिता दिखाई। इस ग्रंथ द्वारा जोतीराव ने आशा प्रकट की है कि उनके देशवासी इस कार्य का अनुकरण करके अपने शूद्र भाइयों को ब्राह्मण लोगों की दासता से मुक्त करेंगे। यह ग्रंथ जोतीराव और उनके सहयोगी धोंडिबा कुंभार के बीच हुए प्रश्नोत्तरों के रूप में है। इस ग्रंथ में जोतीराव ने विष्णु के दशावतारों - मत्स्य, कच्छप, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्कि में से मत्स्य, कच्छप, वराह, नृसिंह, वामन और परशुराम से संबंधित पुराण-कथाओं की धज्जियाँ उडाकर परशुराम और वामन के कुकर्मो की कहानी कही है। उन्होंने आर्यों तथा यहाँ के मूल क्षेत्रपतियों के बीच हुए लंबे संघर्ष और उसके भीषण स्वरूप का स्वरूप का स्पष्ट और कठोर शब्दों में वर्णन किया है। इस ग्रंथ में वे कहते हैं, ब्राह्मणों की स्वार्थी धर्मांधता और अहंकार में ही जातिभेद की जड है और इसी जातिभेद की चक्की में हिंदुस्तान की जनता पीढी दर पीढी पिसती आ रही है। इस ग्रंथ के माध्यम से जोतीराव जो ने शूद्रों तथा अतिशूद्रों को संदेश दिया है कि, वे जब तक अंग्रेजों के शासनकाल में शिक्षा प्राप्त करें तथा स्वतंत्रता, समानता और बंधूता की प्राप्ति के लिए अपने अज्ञान तथा पूर्वधारणाओं को दूर करें। ब्राह्मणों द्वारा डाले गये गुलामी के बंधन तोडकर मानव-अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करे।[4]

4) किसान का कोडा (शेतकऱ्याचा असूड) -

यह ग्रंथ जोतीराव फुले जी ने सन् 1883 में लिखा, लेकिन यह उनके जीवित रहते प्रकाशित नहीं हो पाया। इस ग्रंथ के माध्यम से देश के मध्यम तथा कनिष्ठ स्तर के किसानों की पशू से भी दयनीय स्थिती, उनकी समस्याओं और इस स्थिति

Scanned with CamScanner

को सुधारने के लिए अमल में लाये जानेवाले उपायों का वर्णन चित्रित किया है। इस ग्रंथ में जोतीराव ने मुलतः खेतिहर किसान जो केवल खेती पर गुजारा करते हैं, माली जो खेती के साथ-साथ फल-फूल आदि भी उगाते हैं और गडरिये जो इन दोनों के साथ साथ भेड-बकरियों के रेवड भी पालते हैं उनकी वर्तमान दयनीय स्थिति को रेखांकित किया है। अधिकांश किसान अनपढ, ईश्वरभक्ति में विश्वास करनेवाले और भूखे-कंगाल हैं उनकी पीडा का वर्णन किया है। इस ग्रंथ में जातोरीव ने चारों ओर से पीडित, सताये जानेवाले महाराष्ट्र के गरीब किसान के तंगहाल और दयनीय जीवन का चित्रण किया है। इस ग्रंथ में मुख्यतः कृषि से संबंधित समस्याओं का विवरण दिया है। उन्होंने महाराष्ट्र के किसानों की दुर्दशा के कारणों, उसके लिए जिम्मेदार लोगों, स्वयं किसानों के दोषों आदि समस्याओं का समग्र रूप से विवेचन कर अंत में सुधार के सुझाव दिए हैं। किसान की कष्टमय स्थिति का वर्णन करते हुए जोतीराव ने लिखा हैं -

बदन पर लंगोटी। दौडते हैं हल के पीछे
एक कमली के अलावा। सोने को दूसरा कुछ नहीं स्त्रियों को
छाछ-कनियों से भरते हैं जो पेट। वे धन्य हैं इस संसार में
वस्त्रों की होती है कमी। चिपकते हैं एक-दूसरे से
सरकारी पट्टी नेट। साबका पडे तीन शिखावाले से
ऋणपत्र लिखता है ब्राह्मण। निर्दय मारवाडी का भाट
अज्ञानी कुछ समझता नहीं। पटवारी जो है लिखता
वकील होता है खर्चीला। न्यायाधीश को दया नहीं
जहाँ पाप-पुण्य कुछ नहीं। सब स्वार्थ के दादाभाई।

इसप्रकार जोतीराव ने किसान की दरिद्रता, कृषि-भूमि पर बोझ, पारिवारिक बँटवारे के कारण कृषि-भूमि के छोटे-छोटे टुकडों में बँटवारा, भूमि का उपजाऊपन कम होना, किसान का भूमिहीन होना, सिर पर चढा हुआ कर्ज का बोझ, न्याय की उपेक्षा आदि समस्याओं को विस्तार से चित्रित किया है।[5]

- **सारांश -**

इसप्रकार महात्मा जोतीराव फुले ने अपनी ग्रंथ-संपदाओं के माध्यम से पददलित, शूद्रों तथा अतिशूद्रों में वीररस जागृती, लोगों को ब्राम्हणशाही के जाल से मुक्त कराने हेतु शिक्षा का महत्त्व स्पष्ट करना, उनकी आँखें खोलकर उन्हें पंडे-पुरोहितों की दासता से मुक्त करना, धार्मिक भोलेपन और कुप्रथाओं पर करारी चोट करना, अंधविश्वास, धार्मिक कुप्रथाओं, जपजाप्य तथा कर्मकांडों के प्रति सजग करना, स्वार्थी धर्मांधता और अहंकार में ही जातिभेद की जड है इसका प्रसार करना, स्वतंत्रता, समानता और बंधूता की प्राप्ति के लिए प्रेरित करना, ब्राह्मणों द्वारा डाले गये गुलामी के बंधन तोडकर मानव-अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करना, किसान की दरिद्रता, प्रताडना, भूमिहीनता, कर्ज का बोझ तथा जीवन यापन में आनेवाली समस्याओं चित्रण कर उसमें उपाय सूझाना आदि उद्देश्यों की पूर्ति करने का प्रयास किया है। इसप्रकार जोतीराव फुले ने अपने साहित्य-संपदा के माध्यम से समाज में स्वतंत्रता, समानता और बंधूता स्थापित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

संदर्भ -

1) जगताप मुरलीधर - युगपुरूष महात्मा फुले, महात्मा फुले चरित्र साधने प्रकाशन समिती, महाराष्ट्र शासन, मुंबई, पृ. 150
2) वही - पृ. 156
3) कांडगे राम - महा-महात्मा जोतीराव फुले व्यक्ती व कार्य, राजश्री प्रकाशन, चाकण, पृ. 100-103
4) वही - पृ. 104-111
5) जगताप मुरलीधर - युगपुरूष महात्मा फुले, महात्मा फुले चरित्र साधने प्रकाशन समिती, महाराष्ट्र शासन, मुंबई, पृ. 166-168
6) वेदालंकार वेदकुमार (अनु.) - गुलामी, महात्मा फुले चरित्र साधने प्रकाशन समिती, महाराष्ट्र शासन, मुंबई.

-----------------------------*****-----------------------------

Scanned with CamScanner